जालौनी भेड़ नस्ल का पालन एवं प्रबंधन की जागरूकता

उमा कांत वर्मा[1], शिव कुमार त्यागी[1], नरेंद्र कुमार[2], दिग्विजय सिंह[3], राम बचन[4] और स्वरूप देबरॉय[5]
[1]सहायक प्रोफेसर, पशु आनुवंशिकी एवं प्रजनन, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा
[2]सहायक प्रोफेसर, पशु उत्पादन एवं प्रबंधन, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा
[3]सहायक प्रोफेसर, पशु पोषण, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा
[4]सहायक प्रोफेसर, पशु चिकित्सा जैव रसायन, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा
[5]सहायक प्रोफेसर, पशु शरीर रचना विज्ञान, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा

ग्रामीण अर्थव्यवस्था के उत्थान के लिए स्वदेशी भेड़ नस्लों की भूमिका पर अधिक जोर देने की आवश्यकता है क्योंकि ये नस्लें निम्न इनपुट सिस्टम में पनपने में सक्षम हैं। पिछले कुछ वर्षों में, दुनिया भर में कृषक समुदायों ने अपने निवास की कठोर प्रतिकूल परिस्थितियों की जरूरतों को पूरा करने के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से देशी भेड़ की नस्लों का चयन और सुधार किया है, जो क्रॉसब्रीडिंग के कारण खो सकते हैं।

जालौनी, बुन्देलखण्ड क्षेत्र की मान्यता प्राप्त भेड़ की नस्लों में से एक है और इस नस्ल की भेड़ सीधे नाक रेखा के साथ छोटे से मध्यम आकार की होती हैं। अधिकांश जानवरों में शरीर का रंग सफ़ेद और सिर हल्का भूरा या काला होता है। जालौनी भेड़ इस क्षेत्र की स्थानीय कृषि-जलवायु परिस्थितियों के लिए अच्छी तरह से अनुकूलित हैं और मटन और ऊन इनसे प्राप्त किया जाता है। जालौनी भेड़ों का पालन-पोषण निजी समुदाय द्वारा किया जाता है, जिसमें छोटे, सीमांत या भूमिहीन ज्यादातर अशिक्षित किसान/मजदूर शामिल होते हैं बढ़ती फसल उत्पादन के कारण चरागाह क्षेत्र में कमी के कारण नस्ल की गिरती स्थिति को देखते हुए, इसके संरक्षण की आवश्यकता है।

जालौनी भेड़ का वितरण

यह नस्ल उत्तर प्रदेश राज्य के जालौन, झाँसी, ललितपुर जिलों और मध्य प्रदेश के टीकमगढ़, दतिया जिलों में देखने को मिलती है। जालौनी भेड़ का प्रजनन क्षेत्र उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश राज्यों के बुन्देलखण्ड क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

जालौनी भेड़ की विशेषताएं

जालौनी भेड़ें छोटी से मध्यम आकार की होती हैं और उनकी नाक सीधी होती है। अधिकांश जानवरों में शरीर का रंग सफेद और सिर हल्का भूरा या काला होता है। आम तौर पर लगभग 5 प्रतिशत जानवर, हालांकि ललितपुर जिले में 50 प्रतिशत तक, पूरी तरह से काले रंग के होते हैं। ललितपुर जिले की भेड़ें आकार में अपेक्षाकृत छोटी और सुगठित शरीर वाली होती हैं। नर और मादा दोनों के सींग नही होते हैं और चेहरे पर ऊन नहीं पाया जाता है । कान बड़े, सपाट और झुके हुए होते हैं और पूंछ मध्यम आकार की और पतली होती है। ऊन आम तौर पर सफेद, मोटा, छोटे रेशेदार और खुला होता है।

स्वास्थ्य प्रबंधन और प्रजनन प्रदर्शन

अधिकांश किसानों द्वारा सामान्य बीमारियों के लिये टीकाकरण नहीं कराया जाता है। जागरूकता की कमी और खराब वित्तीय स्थिति के कारण रोगग्रस्त पशुओं को कोई पशु चिकित्सा उपचार भी प्रदान नहीं किया जाता है। क्षेत्र में परजीवी संक्रमण और निमोनिया को प्रमुख

बीमारियों के रूप में देखा गया है। मेमने की मृत्यु दर, औसतन 15-20% और अधिकतम 50% है। सर्दी के मौसम में मेमने की मृत्यु मुख्य कारण निमोनिया बताया गया है तथा अन्य मौसम में डायरिया को मुख्य कारण बताया गया है। 1-2% मामलों में गर्भपात देखने को मिला है।

प्रजनन प्राकृतिक संभोग द्वारा होता है। 50 से अधिक जानवरों वाले कुछ बड़े झुंडों में एक से अधिक वयस्क नर रहते हैं। अन्य नर जानवरों को आम तौर पर मांस के प्रयोजन के लिए 8-12 महीने में बेच दिया जाता है। नर और मादा दोनों के लिए यौन परिपक्वता की औसत आयु एक वर्ष है। पहले मेमने के जन्म के समय औसत आयु 1.5 से 2 वर्ष होती है और मेमने के जन्म के समय एक वर्ष का अंतराल होता है। एक भेड़ अपने जीवन काल में औसतन 7-9 मेमनों को जन्म देती है। लैंबिंग (बच्चे देने की क्रिया) पूरे वर्ष भर होती है, जिसमें अक्टूबर और नवंबर में जुड़वाँ मेमने अधिक संख्या में पैदा होते हैं।

सामान्य जानकारी	
प्रजनन पथ	ललितपुर, झांसी, जालौन (उत्तर प्रदेश) और दतिया, टीकमगढ़ (मध्य प्रदेश)
प्रजनन क्षेत्र पर टिप्पणी	इस क्षेत्र की विशेषता है समतल भूमि जिसमें छोटी पहाड़ी होती है।
मुख्य उपयोग	भोजन - मांस, फाइबर- ऊन
रंग	शरीर का रंग सफेद व चेहरा सफेद या काला होता है। कुछ जानवर पूरी तरह से काले होते हैं।
सींग	नहीं
सींग की संख्या	शून्य
सींगों का आकार और लम्बाई	सींग नहीं पाए जाते हैं।
बाल या ऊन	ऊन
अन्य विशेषताएँ	सीधी नाक रेखा, ऊन मोटे, छोटे स्टेपल, खुले और आम तौर पर सफेद रंग का होता है। चेहरे में ऊन नहीं होती।

जालौनी भेड़ की उपयोगिता

जालौनी भेड़ को मटन और ऊन उत्पादन के लिए पाला जाता है। ऊन की गुणवत्ता मोटी होती है। कतरनी का अभ्यास वर्ष में तीन बार अक्टूबर-नवंबर, मार्च-अप्रैल और जून-जुलाई के महीनों में किया जाता है। औसत ऊन उत्पादन 150-200 ग्राम/कतरनी है और वार्षिक उत्पादन 400 से 750

ग्राम के बीच है। नर को 9-12 महीने की उम्र में बेच

	नर	मादा
ऊंचाई (औसत सेमी)	71.9	63.3
शरीर की लंबाई (औसत सेमी)	71.5	63.2
हृदय परिधि (औसत सेमी)	82	74.6
वज़न (औसत किग्रा)	35.5	27.33

दिया जाता है, जिनका औसत वजन 16-20 किलोग्राम होता है। भेड़ 107 से 128 दिनों तक दूध देती है और प्रतिदिन 300 से 350 ग्राम दूध का उत्पादन होता है।

निष्कर्ष

पशुपालको को बेहतर भोजन, स्वास्थ्य देखभाल प्रथाओं, स्वच्छता प्रबंधन, उपयुक्त आनुवंशिक प्रबंधन और उनकी भेड़ों के रखरखाव के बारे में शिक्षित करने की आवश्यकता है। पशु उत्पादों के लिए स्थानीय बाजारों का उपयुक्त सुदृढ़ीकरण की विशेष आवश्यकता है, जिससे भेड़ पालक ऊन और मांस का उत्पादन कर अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार कर सकते है।